Psychology Hons.

B. A. Part - 2

Paper - 4th

B.A. Part II Psychology Hons.
Systems of Psychology.
Paper – IV

Behaviourism. व्यवहारवाद
Contribution of Skinner.

B.F. Skinner का जन्म पेनसिलवानिया के छोटे से कसबा में 20 March 1904 ई० में हुआ था। उनका पालन पोषण हुआ। वे अपने स्कूल के प्रति उन्हें बड़ा आकर्षण था और प्रायः अन्य विद्यार्थियों से पहले ही वे स्कूल पहुँच जाते थे। वे अपने लड़कपन, किशोरावस्था में अनेक अनेक प्रकार की चीजों का निर्माण किया करते थे। जैसे - बर्फ पर दौड़नेवाली गाड़ी, बाहनों के डिब्बे, नौकाएं, चक्कवाले, गुलेल, हवाई जहाज के नमूने, यहाँ तक कि भाप से चलनेवाली तोप भी जिससे वे अपने पड़ोसियों की छत पर आलू के गोले फेंकते थे।

इन लक्षणों से स्पष्ट है कि Skinner में बौद्धिकता, मौलिकता और सर्जनात्मकता बहुत अधिक थी। haymilton college के विद्यार्थी के रूप में न तो वे संस्था के कार्यक्रमों से सन्तुष्ट रहे और न संस्था उनके आचरण से सन्तुष्ट रही। कुछ ही समय बाद Skinner और उनके कुछ साथी महाविद्यालय की खुली आलोचनाएं करने लगे, यहाँ तक कि उन्हें चेतावनी भी मिली कि शायद वे डिग्री प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इसके बावजूद उन्होंने 1930 ई० में अंग्रेजी भाषा में डिग्री प्राप्त की। आरम्भ में उन्हें कवि और कहानीकार बनने की इच्छा हुई परन्तु बाद में विचार बदल दिया और एक अति गम्भीर विद्यार्थी का रूप धारण कर उन्होंने Howard University से 1931 ई० में पी० एच० डी० की उपाधि ली। अपने इस शोध कार्य में उन्होंने इस विश्वास पर बल दिया कि उद्दीपक और अनुक्रिया के बीच का सहसम्बन्ध (Correlation) ही Reflex है।

बुकज ने लिखा है कि Skinner की

मनोविज्ञान में सबसे प्रमुख और प्रभावशाली व्यक्ति थे गये हैं। उनकी लम्बी आयु में उनकी अभिव्यक्तियाँ के क्षेत्र और आधुनिक मानव के लिए एक महत्व अनेक है। Psychology Today नामक पत्रिका ने Skinner को आज का मानव कहा और यह भी कहा कि जब इतिहास अपना निर्णय देगा तो Skinner को इस शताब्दी में मनोविज्ञान का बड़ा सेवक मानेगा।

Skinner के शोध-विषय से ही उनके सामान्य दृष्टिकोण का परिचय मिलता है उनके शोध-निबन्ध का शीर्षक था। The concept of Reflex in the discription of behaviour. इस thesis में, उन्होंने दावा किया कि उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच का सहसम्बन्ध ही Reflex है उन्होंने उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच किसी intervening variable की सम्भावना से इनकार किया।

शुल्ज के अनुसार Skinner ने कोर व्यवहारवाद को शुद्ध विवरणात्मक (descriptive) रूप में प्रस्तुत किया जिसमें केवल Respones का अध्ययन है और जो पूर्णतः सैद्धान्तिक कल्पना से मुक्त है।

Skinner ने प्राणी अथवा सीखनेवाले पर कुछ बल नहीं दिया, अर्थात उनका stimulus-response दृष्टिकोण था। न कि उद्दीपन प्राणी अनुक्रिया stimulus-organism-response, उन्होंने अपने अध्ययनों में बहुत सारे subject के इस्तेमाल को भी पसन्द नहीं किया। उनका विश्वास था कि बहुत से प्रयोज्यों के अध्ययन से लाभ नहीं होता है क्योंकि ऐसे अध्ययनों से average man के सम्बन्ध में जानकारी हो सकती है जबकि औसत व्यक्ति एक कल्पना है वास्तविक व्यक्ति नहीं। उनका विश्वास है कि जो विज्ञान समूह के व्यवहारों का अध्ययन करता है वह व्यक्ति के व्यवहारों के समझने में पूरा सफल नहीं होगा। उनके विचारों से स्पष्ट है कि वे Psychologist study में Statistics के इस्तेमाल से बचना चाहते थे। उनका विश्वास था कि विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए केवल यही करता है कि एक ही

व्यक्ति को सुनियंत्रित प्रयोगात्मक परिस्थिति में बार-बार जाँचकर पर्याप्त रिकॉर्ड प्राप्त करें। उनके अनुसार अधिक संख्या में प्रयोज्यों को जाँचने का अर्थ होगा औसत निकालना जिसमें individual differences छिप जायेंगे।

Skinner ने व्यवहारों के दो रूप माना है।

(i) ऐसे व्यवहार जो ज्ञात पश्चात् उद्दीपन द्वारा reinforcement की सहायता से स्थापित किये जाते हैं। जैसे- पैवलव ने घंटी पर लार स्रवण की क्रिया उत्पन्न की। ऐसे व्यवहारों को, जैसे तेज रोशनी में पुतली का छोटा होना या हवा के झोंके से आँख का बन्द हो जाना, इत्यादि को Skinner ने respondent व्यवहार कहा जिसमें कोई ज्ञात हुआ उद्दीपन किसी जानी हुई अनुक्रिया से सम्बन्धित रहती है या उसे सम्बन्धित किया जाता है। ऐसे व्यवहार अपने स्वरूप में experimenter elicited व्यवहार होते हैं। प्रत्यर्थी व्यवहारों से भिन्न, उन्होंने operant behaviour को पहचाना जो प्रयोज्य-प्रदर्शित व्यवहार होते हैं। ऐसे व्यवहार प्राणी अपनी इच्छा से किसी परिस्थिति में प्रदर्शित करते हैं। Skinner के अनुसार respondent और प्रवर्तन, दोनों प्रकार के व्यवहार अनुकूलन conditioning द्वारा उत्पन्न किये जा सकते हैं। जिन्हें respondent conditioning और operant conditioning कहा।

(ii) प्रवर्तन व्यवहार का प्रभाव प्राणी के वातावरण पर पड़ता है और प्राणी की अपनी निश्चित भूमिका होती है। जबकि प्रत्यर्थी व्यवहार में प्राणी एक निश्चित क्रिया करने के लिए बाध्य रहता है और अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता है। Skinner ने अपने तंत्र में प्रवर्तन-अनुकूलन को ही सर्वाधिक महत्व दिया, जो न केवल प्राणी के व्यवहारों को निश्चित रूप दे सकता है बल्कि सम्पूर्ण समाज को एक वांछनीय व्यवहार-प्रतिरूप प्रदान कर सकता है।

Scanned with CamScanner

4

Reinforcement की विभिन्न दिशाओं से देखने और व्यवहारों को जोड़ने-पकड़ने में इसकी भूमिका का प्रयोगात्मक अन्वेषण करने में Skinner ने अद्भुत सफलता प्राप्त की। reinforcement के विभिन्न पक्षों पर किये गये व्यापक प्रयोगों पर आधारित उन्होंने जो Schedule of reinforcement दिया वह अपने आप में एक विज्ञान बन गया।

दूसरे अन्वेषकों के समान उन्होंने भी अपने चूहों को प्रत्येक बार लीवर दबाने पर पुनर्बलन दिया था, परन्तु Skinner ने सोचा कि वास्तविक संसार में शुद्ध क्रिया पर सदा-पुनर्बलन प्राप्त होना आवश्यक नहीं।

इसी प्रकार Skinner ने बार-बार इस बात पर बल दिया कि Free will को त्याग कर determinism को मानना होगा। तब ही मानव व्यवहार का वैज्ञानिक विश्लेषण सम्भव है। इसी विषय को उन्होंने अपनी एक पुस्तक "Beyond Freedom and Dignity" प्रकाशित किया। इस पुस्तक का मूलमंत्र व्यक्ति का विकास और समाज में नियंत्रण का गठन ही विषय था। इसी तरह Skinner ने कहा है कि न खोखला सम्मान और भ्रामक स्वतंत्रता इसी पुस्तक ने Skinner को राष्ट्रीय ख्याति मिली। इसलिए इसकी आलोचनाएँ हुआ। इसी प्रकार Skinner ने व्यवहारों का अध्ययन सुचारु रूप से किया।